माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान की योग्यता पर आत्मसंकल्पना, समायोजन तथा तार्किक योग्यता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉ० ऑफ फिलॉसफी (पी.एच -डी.) उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोधकार्य की शोध संक्षेपिका

2024

Kalpana Kumari 05/03/24

पर्यवेक्षक

कल्पना कुमारी

Dr. Kalpana Kumari
Assistant Professor
Dr ZHTT College, Darbhanga

असिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार

शोधकर्त्ता

रूपम कुमारी

PAT ROLL- 2206056

CLASS ROLL- 32

Rupam Kumari

माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की समस्या समाधान की योग्यता पर आत्मसंकल्पना, समायोजन तथा तार्किक योग्यता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसका एक पक्ष तो व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करता है जिसमें बुद्धि रूचि, आत्मविश्वास व प्रोत्साहित होना आते हैं। दूसरा पक्ष समाज के भावी विकास में योगदान देता है। शिक्षा के द्वारा ही विचार आध्यात्मिक मूल्य महत्वाकांक्षाओं का विकास और संस्कृति के सरक्षण का कार्य भी किया जाता है व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है वास्तव में यह माना जाता है कि उसका सम्पूर्ण जीवन शिक्षा काल है। मनुष्य को समाज में रहते हुए कई व्यक्तियों से अन्तक्रिया करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज के कुछ नियम, परम्पराएं, संस्कृति एवं मूल्य होते है व्यक्ति को उस समाज में सामंजस्य स्थापित के योग्य बनाने के लिए उसका विकास उस समाज या समुदाय की सरचना के अनुसार किया जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसमें सामाजिक कौशलों का विकास हो सके। सामाजिक सामजस्य स्थापित करने में व्यक्ति की समस्या समाधान की योग्यता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी प्रकार की समस्या का सामना अवश्य ही करना पड़ता है इस हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य यह हो जाता है कि वह विद्यार्थियों में समस्या समाधान योग्यता को विकसित करे ताकि ये में आने वाली चुनौतियों व समस्याओं का साहस से सफलतापूर्वक सामना कर सके । वर्तमान शोध छत्रों की समस्या समाधान योग्यता पर आत्मसंकल्पना, समायोजन तथा तार्किक योग्यता के प्रभावों पर आधारित है क्योकि समस्या समाधान योग्यता शिक्षा के उद्देश्यों मे महत्वपूर्ण स्थान रखती है जिसे विकसित करना आवश्यक है तथा इसे

Kalpana Rupam Kumari

परभावित करने वाले कारको की जानकारी जरूरी है विशेष रूप से 21वी सदी के कौशल के अधिगम कौशल के रूप मे इसका निर्धारण शोध की महत्ता को और अधिक बढ़ाती है इस शोध के अंतर्गत आने वाले प्रमुख चरों को भी समझना आवश्यक है ।

समस्या समाधान योग्यता

संसार के प्रत्येक व्यक्ति को जीवन भर किसी न किसी समस्या का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति को अपनी कई आवष्यकताएं पूरी करनी होती है। उन्ही आवष्यकताओं पर आधारित कई लक्ष्य निर्धारित किये जाते है। उन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए व्यक्ति कई बाधाओं का अनुभव करता है और परिणामस्वरूप उसे कई समस्याओं का सामना करना होता है और इन समस्याओं के समाधान के लिए उसे उन पर विषेष रूप से ध्यान देना पड़ता है। इस उद्देष्य के लिए यह चिन्तन करता है व विधिवत तरीके से उनका हल ढूंढने का प्रयास करता है। समस्या समाधान सम्बन्धी यह व्यवहार व्यक्ति एवं समाज की प्रगति में अत्यन्त सहायक सिद्ध होता है।

आत्म संकल्पना

आत्म संकल्पना समस्याओं को सुलझाने में सहायता देती है और उसके आनन्दपूर्ण एवं सन्तुष्ट जीवन यापन में सहायक हम जैसा अपने बारे में सोचते हैं कि हम अपने आप में क्या है, हमारी क्या अच्छाइयां तथा क्या बुराइयां है, हममें किस प्रकार की किसती योग्यताएँ तथा क्षमताएँ है, किस परिस्थिति में हम कैसा व्यवहार कर सकते हैं। विपत्ति या संकट का हम कैसे मुकाबला कर सकते है। हमें लोगों का कितना प्रेम, सहयोग तथा विस्वास प्राप्त हो सकता है आदि आदि विभिन्न बातों से सम्बन्धित हमारे अपने प्रति जो धारणाऐं या विचार बने हुए होते है उसे ही आत्म संकल्पना अथवा स्वअवधारणा का नाम दिया। है। आत्म संकल्पना ऐसी प्रणाली पर आधारित है जिसमे कोई व्यक्ति अपनी आषंका, भतर्सना एवं वाह्य आक्रमण के विरुद्ध एक डिफैन्स सिस्टम बनाता है, जोकि उसके अपने अनुभव पर आधारित होता है। आत्म संकल्पना में व्यक्ति अपने स्वयं के प्रति समस्त ज्ञान तथा अभिव्यक्ति का मूल्यांकन करता है। एक तरह से व्यक्ति का यह अपने स्वयं के बारे में एक निष्चित नजरिया होता है।

Kalpana

Rupam Kumari

समायोजन

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ इच्छाएं, आवश्यकताऐं तथा आकांक्षाएं होती है। यह इन्हीं को प्राप्त अथवा पूर्ण करने का निरन्तर प्रयास करता है। किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह सदैव ही इन आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को पूरा कर ही लें। कुछ व्यक्ति अपनी इन इच्छाओं व आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेते है और इस प्रकार वे अपने आप को समायोजित कर लेते है लेकिन जो व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाते उनमें भग्नाशा, तनाव, द्वन्द, चिन्ता, शंका आदि मनोवेग उत्पन्न हो जाते है। अर्थात् समायोजन का सामान्य अर्थ यह है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी आवश्यकता एवं उससे सम्बन्धित परिस्थिति के साथ सामन्जस्य स्थापित कर लेता है तो वह समायोजित है। यह सामंजस्य समाज द्वारा मान्य मान्यताओं के अनुरूप होता है।

तार्किक योग्यता

तर्क चिन्तन का सर्वोच्च रूप है किसी समस्या पर चिन्तन करते समय जटिलताओं को सरल बनाने में तर्क का सहारा लेना होता है और इस स्थिति में व्यक्ति अपने अनुभवों को समस्या और कारण के बीच विष्लेषणात्मक चिन्तन में प्रयोग करता है। यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति ज्ञात परिस्थितियों के अनुभवों का प्रयोग करता है जिसमें स्मरण षक्ति मानसिक योग्यता, समझदारी, विकास, सावधानी, संकेतों को अर्थपूर्ण रूप से समझने, प्रदर्षित करने की क्षमता सही गुण ग्रहण करने की योग्यता भी षामिल होती है।

चिन्तन एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जो सभी प्राणियों में होती है। इसे मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषित किया है। कुछ लोगों ने इसे वातावरण से मिलने वाली सूचनाओं का मानसिक जोड़-तोड़ बतलाया है तो कुछ लोगों ने इसे एक ऐसी मध्यस्थ प्रक्रिया माना है जो किसी समस्या (या उद्दीपक) तथा उसके समाधान (यानी, सही अनुक्रिया) के मध्य या बीच में होती है। चिंतन चाहे जिस तरह की भी मानसिक प्रक्रिया क्यों न हों, इतना तो स्पष्ट है कि इसे सीधे देखा नहीं जा सकता है और इसके बारे में हम व्यवहारों के आधार पर परोक्ष रूप से जान पाते है। यही कारण है कि चिंतन को एक अव्यक्त मानसिक प्रक्रिया कहा गया है।

Kalpana

Rupam Kumari

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

चेतरी (2014) ने किशोरों के आत्म-संकल्पना तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में शहरी तथा ग्रामीण, विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा दसवी के 480 छात्र एवं छात्राओं को लिया गया निष्कर्ष इस प्रकार थे कि लिंग के आधार पर आत्म सकल्पना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मकबूल (2014) द्वारा कामकाजी व बेरोजगार महिलाओं की आत्म-सकल्पना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे (1) कामकाजी महिलाओं की आत्म संकल्पना का आकलन (2) बेरोजगार महिलाओं की आत्म संकल्पना का मापन करना (3) कामकाजी व बेरोजगार महिलाओं की आत्म संकल्पना की तुलना करना अध्ययन हेतु 100 महिलाओं का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। (जिसमें से 50 महिलाएँ पढ़ी लिखी व कामकाजी थी जबकि 50 महिलाएं पढ़ी लिखी थी किन्तु बाहर नौकरी नहीं करती थी) न्यादर्श का चयन जम्मू कश्मीर पूर्वी क्षेत्र (बारामूला व कुपवारा) जिले से किया गया। आत्म संकल्पना के परीक्षण हेतु मुक्ता रानी रस्तोगी द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि कामकाजी व बेरोजगार महिलाओं की सामान्य आत्म सकल्पना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। कामकाजी महिलाओं में बेरोजगार महिलाओं की अपेक्षा आत्मविश्वास अधिक पाया गया, कामकाजी महिलाओं में योग्यता का स्तर भी बेरोजगार स्त्रियों की अपेक्षा अधिक था व कामकाजी स्त्रियों का समाजीकरण भी उच्च था।

साह (2014) ने समलिंगो मे आत्मसकल्पना तथा व्यक्तित्व का सहसंबंध पर अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में 18-40 वर्ष के 30 पुरुष का पुरूष से संबंध) को लिया गया निष्कर्ष थे कि आत्मसंकल्पना तथा व्यक्तित्व में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया साथ शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक आत्मसंकल्पना के अंक उच्च पाए गए।

वर्मा, नागइच (2014) ने तनाव का आत्म-सकल्पनातथा उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव पर अध्ययन किया। कालेज के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया।

Rupam Kumari

अध्ययन का सार इस प्रकार था कि कम आत्म-संकल्पनातनाव के स्तर में बढ़ोत्तरी करता है।

गुप्ता (2001) ने विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर की विद्यालयी किशोरियों के सामाजिक समायोजन का शिक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ने वाली किशोरियाँ सामाजिक समायोजन में ग्रामीण क्षेत्रों की किशोरियों से बेहतर पायी गई। प्राइवेट विद्यालयों की छात्राओं का सामाजिक समायोजन सरकारी विद्यालय की छात्राओं से बेहतर था अंग्रेजी माध्यम वाले की किशोरियों का हिन्दी माध्यम वाले विद्यालयों की किशोरियों की तुलना में सामाजिक समायोजन उच्च पाया गया। माता-पिता की शिक्षा का भी सकारात्मक प्रभाव भी किशोरियों के सामाजिक समायोजन पर पड़ता है।

अग्रवाल (2003) द्वारा किशोरों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, उनकी शैक्षणिक सफलता व असफलता के सन्दर्भ में किया गया। अध्ययन का उद्देश्य सफल व असफल किशोरों के भावात्मक, सामाजिक व शैक्षणिक समायोजन के स्तरों का पता लगाना था। न्यादर्श के रूप 200 विद्यार्थियों को जो कि 14-18 वर्ष के थे को चुना गया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि सफल किशोरों का सामाजिक भावात्मक व शैक्षणिक समायोजन असफल किशोरों की अपेक्षा उच्च था।

काशीनाथ(2003) द्वारा शैक्षणिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालय समायोजन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का अन्तक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन किया उद्देश इस प्रकार थे कि विद्यालयीन वातावरण के साथ समायोजित व कुसमायोजित विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में अन्तर ज्ञात करना। न्यादर्श के रूप में 15-16 वर्ष के 200 विद्यार्थियों (102 लड़के व 98 लड़कियों) को लिया गया। अध्ययन में पाया गया कि (1) मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। (2) विद्यार्थी जिनका सामाजिक तथा भावात्मक समायोजन बेहतर था उन्होने अच्छे शैक्षणिक अंक प्राप्त किए।

बाल कृष्णनन (2012) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन के सम्बन्ध में अध्ययन किया। इनके द्वारा अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक

Kalpang   Rupam Kumari

स्तर के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करके चयनित किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना था तथा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग निवास व परिवार के प्रकार के सन्दर्भ में सामाजिक समायोजन में अन्तर का अध्ययन करना था । इस उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न परिकल्पनाएँ बनाई गई (1) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन उच्च है। (3) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में लिंग, निवास व परिवार के प्रकार के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर है। इनके अध्ययन के परिणाम इस प्रकार थे:- (1) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन उच्च था (3) उच्च माध्यमिक स्तर के बालक बालिकाओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर था। (4) ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयी विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।

दूबे (2011) द्वारा विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव नामक शीर्षक पर आध्ययन किया गया, इन्होने अपने शोध में पाया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा व समायोजन के मध्य सार्थक संबध है। विद्यार्थियों को मिलने वाली शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके विद्यालय में अच्छे समायोजन तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सहायक होती है।

इलाह (2012) द्वारा हाईस्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया, व इस अध्ययन में पाया गया कि समायोजन व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य निम्न कोटि का धनात्मक सह सम्बंध है।

सिंग (2003) द्वारा पुरुष तथा महिला शिक्षकों के बीच तनाव का व्यक्तित्व आवश्यकताओं तथा समायोजन के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन किया परिणाम यह प्राप्त हुए कि (1) उच्च समायोजित तथा निम्न समायोजित महिला व पुरुष शिक्षकों में तनाव का स्तर समान पाया गया (2) डिग्री कॉलेज के पुरुष शिक्षकों के समायोजन तथा तनाव के स्तर में सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। (3) 001 स्तर पर महिला तथा

Kalpana

Punam Kumari

पुरुष तथा महिला शिक्षकों में व्यक्तित्व आवश्यकताओं तथा समायोजन दोनों का तनाव के साथ धनात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

समस्या कथन-

"माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की समस्या समाधान की योग्यता पर आत्मसंकल्पना, समायोजन तथा तार्किक योग्यता के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध का महत्व

माध्यमिक स्तर के छात्रों के विकास में शोध का महत्व अत्यधिक है। यह उन्हें सिर्फ ज्ञान का अध्ययन करने के बजाय, अनुसंधान कौशल, तर्कशक्ति, और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्राप्त कराता है। छात्र शोध के माध्यम से नवाचार खोजते हैं, विचारों को विकसित करते हैं, और नए ज्ञान का निर्माण करते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से, छात्र समस्याओं के समाधान के लिए अनुशासन और अद्वितीय दृष्टिकोण की ओर बढ़ते हैं। इसके अलावा, छात्रों की आत्म-संकल्पना भी बढ़ती है, क्योंकि वे अपने अनुसंधान कौशल का उपयोग करके स्वयं के प्रति आत्मविश्वास बढ़ाते हैं और अपने शिक्षा और पेशेवर विकास में सफल होने का संकल्प बनाते हैं। शोध छात्रों के व्यक्तिगत और आवश्यकताओं को समझने में मदद करता है और उनके स्वयं के प्रति उनके संवाद, विचार, और क्रियाओं को समझने की क्षमता को विकसित करता है। इसलिए, शोध माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व के विकास को प्रोत्साहित करता है और उन्हें समृद्धि और सफलता की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार (सरकारी व गैर सरकारी) के प्रभाव का अध्ययन करना

Kalpana

Rupam Kumari

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना

3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर तार्किक योग्यता के प्रभाव का अध्ययन करना

4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर आत्मसंकल्पना के प्रभाव का अध्ययन करना

5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार, आत्मसंकल्पना तथा उनकी अंतः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना

6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार, समायोजन तथा उनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना

7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार, तार्किक योग्यता तथा उनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना

8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर आत्मसंकल्पना तथा उनकी अंतः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना

9. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर समायोजन तथा उनकी अंतः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना

10. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर तार्किक योग्यता तथा उनकी अंतः क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनाऐं हैं

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार (सरकारी व गैर सरकारी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

Kalpana

Rajani Kumari

2. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर समायोजन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर तार्किक योग्यता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

4. माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर आत्मसंकल्पना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार, आत्मसंकल्पना तथा उनकी अंतः क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है,

6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार, समायोजन तथा उनकी अंतः क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालयों के प्रकार, तार्किक योग्यता तथा उनकी अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

8. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर आत्मसंकल्पना तथा उनकी अंतः क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

9. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर समायोजन तथा उनकी अंत क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

10. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर तार्किक योग्यता तथा उनकी अंत क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

संक्रियात्मक परिभाषा

समस्या समाधान की योग्यता (Problem solving ability): समस्या समाधान की योग्यता एक व्यक्ति की क्षमता है जो समस्याओं को पहचानने, विश्लेषण करने, और समाधान करने की क्षमता को सूचित करती है। यह योग्यता उन्हें

Kalpana Rupam Kumari

दुर्बलताओं को मजबूतियों में बदलने में मदद करती है और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामान्य रूप से असमान तरीके से सामना करने की क्षमता प्रदान करती है।

आत्मसंकल्पना (Self-esteem): आत्मसंकल्पना व्यक्ति की स्वयं-मूल्यमान और स्वाभाविक आत्म-संवाद की मानसिक स्थिति है. यह उनकी आत्मा के साथ जुड़ा होता है और उन्हें उनकी क्षमताओं और सामर्थ्यों पर विश्वास दिलाता है. यह आत्मसंकल्पना व्यक्ति को आत्म-संवाद में सकारात्मक और सात्विक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है, जिससे व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता पाने में मदद मिलती है.

समायोजन (Organization): समायोजन क्षमता व्यक्ति के जीवन को संगठित और प्रबंधित करने की क्षमता है. यह व्यक्ति को समय, संसाधन, और जीवन के अनुभवों को प्रबंधन में मदद करता है. समायोजन के माध्यम से, व्यक्ति समस्याओं को व्यावसायिक तरीके से हल करने में सक्षम होता है और उनकी प्रोजेक्ट्स को प्राथमिकता देने में मदद करता है.

तार्किक योग्यता (Logical Ability): तार्किक योग्यता व्यक्ति की योग्यता होती है विचारों को तर्कसंगतीपूर्ण और स्वीकृति योग्य रूप से प्रस्तुत करने की. यह योग्यता उन्हें अनुसंधान करने, समस्याओं को विश्लेषण करने और विवेचना करने में मदद करती है. तार्किक योग्यता से व्यक्ति अपने सोचने की प्रक्रिया को प्रमोट करता है और उन्हें तर्कशक्ति का विकास करने में मदद करती है.

अनुसंधान प्रविधि-

शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षणात्मक है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए दरभंगा जिले के सभी सरकारी विद्यालय एवं गैरसरकारी विद्यालय होंगे । इनमें से शोधार्थी के लिए शोध के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए विद्यालयों से प्रदत्त संकलन के लिए सम्पर्क

Kalpana Rupam Kumari

किया जाएगा । अन्त में 20 विद्यालयों से प्रदत्त संकलन किया जाएगा । इन सब विद्यालयों में से 400 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयनित किया जाएगा । ये विद्यार्थी ग्रामीण व शहरी दोनो पृष्ठभूमि के होंगे ।

सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु विद्यार्थियों के चयन का आधार केवल माध्यमिक स्तर के होंगे ।

2. यह शोध अध्ययन कार्य केवल बिहार के दरभंगा जिले तक सीमित होंगे ।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल सरकारी विद्यालय एवं गैरसरकारी विद्यालय अध्ययन का आधार होंगे ।

4. इस शोध अध्ययन में केवल दरभंगा, बिहार के विधार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा ।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु दरभंगा ज़िला अंतर्गत 20 माध्यमिक विद्यालयों के कुल 400 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया जाएगा जिनमे 200 (100 शहरी व 100 ग्रामीण) सरकारी विद्यालयों एवं 200 (100 शहरी व 100 ग्रामीण) गैरसरकारी विद्यालयों से चुने जाएंगे ।

कुल संख्या
400

200 सरकारी → 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण

200 गैरसरकारी → 100 शहरी एवं 100 ग्रामीण

Rupam Kumari

उपकरण

1. आत्म संकल्पना

आत्म संकल्पना के मापन हेतु डॉ. शेरी, डॉ वर्मा तथा डॉ गोस्वामी द्वारा निर्मित आत्म संकल्पना परीक्षण का उपयोग किया जाएगा।

2. समायोजन इनवेन्टरी

विद्यार्थियों के समायोजन के परीक्षण हेतु सक्सेना व सिंह द्वारा निर्मित समायोजन इनवेन्टरी का प्रयोग किया जाएगा।

3. तार्किक योग्यता

तार्किक योग्यता हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जाएगा जो माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए उपयोगी होगी।

वर्तमान शोध मे उपकरण की उपलब्धि एवं आवश्यकता अनुसार नवीन उपकरण का चयन किया जा सकता है।

संख्याकिक विश्लेषण

अध्ययन में केवल सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया जाएगा।

अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न चरों के निष्कर्षो की गणना एवं तुलना हेतु साख्यिकी के रूप में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, सह-सम्बन्ध गुणांक, बहुचरीय सह-सम्बन्ध, प्रतीपगमन समीकरण तथा प्रतिशत का ही प्रयोग किया जाएगा

परिणाम एवं विवेचना

प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त किए गए परिणामों का उद्देश्य एवं परिकल्पनावार विवरण एवं व्याख्या को प्रस्तुत शोध के अनुसार किया जाएगा।

Kalpana Rupam Kumari

शोध प्रारूप

शोध प्रबंध मुख्यतः निम्न अध्यायों में विभक्त किया जायेगा।

प्रथम अध्याय:- प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय:- संबंधित साहित्य का अध्ययन

तृतीय अध्याय:- अध्ययन विधि

चतुर्थ अध्याय:- प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय:- निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ सूची

अग्रवाल, जे.सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर अत्री, बी. के. (2005). शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार नई दिल्ली: सुमित इन्टरप्राइजेस भटनागर ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

दास, भगवान (2006). शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन्स.

गुप्ता, एस.पी. (2004) अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006) शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर मदान, पी. एवं गर्ग, एस. (2016) भारत में शिक्षा स्थिति, समस्याऐं एवं मुद्दे. अग्रवाल पब्लिकेशन

Kalpana

Rupam Kumari

मित्तल, एस. (1995) शैक्षिक तकनीकी जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूप रेखा, राष्ट्रीय नई दिल्ली शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2005.

पाल, हंसराज (2006), प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, नई दिल्ली.

पाल, हंसराज एवं शर्मा, मंजुलता (2007). प्रतिभाशालियों की शिक्षा नई दिल्ली: क्षिप्रा पब्लिकेशन्स.

पाण्डेय, के एवं श्रीवास्तव, एस. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली: टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग

कम्पनी लिमिटेड, पाठक, पी.डी. (2006). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2

शर्मा, आर. ए. (2004), शिक्षा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ,

शर्मा, आर. ए. (2005), अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

शर्मा, आर. ए. (2005), भावी शिक्षकों हेतु आधारभूत कार्यक्रम. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ,

शर्मा, आर. ए. (2005). पाठ्यक्रम, शिक्षणकला तथा मूल्यांकन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ. शर्मा, आर. ए. (2005), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी अनुसंधान आर. लाल

बुक डिपो, मेरठ, शर्मा, आर. ए. (2005), शैक्षिक एवं मानसिक मापन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ. शर्मा, राजीव एवं अन्य (2012), उद्यमिता विकास, देवी अहिल्या प्रकाशन, इन्दौर

सिंह, ए.के. (2009) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास.

Dr. Kalpana Kumari
Assistant Professor
Dr ZHTT College, Darbhanga